प्रेमचंद के कथा साहित्य में दलित जीवन का अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़ आगरा के अन्तर्गत पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
सन् 2019

शोध निर्देशक

डॉ. सूरज प्रकाश (बड़त्या)
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.

शोधार्थी

मुकेश कुमार

विभागाध्यक्ष
प्रो. शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
डी.ई.आई.

कला संकाय प्रमुख
प्रो. जे. के. वर्मा

हिन्दी विभाग, कला संकाय,
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

'प्रेमचंद के कथा साहित्य में दलित जीवन का अध्ययन'

सादा एवं सरल जीवन के मालिक प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को बनारस शहर से 4 मील दूर लमही गाँव में हुआ। अपने जीवन में विषमताओं से वह लगातार खेलते रहे। प्रेमचंद उच्च कोटि के मानव थे। उन्हे गाँव जीवन से प्रेम था। चूंकि प्रेमचंद का जन्म आजादी से पूर्व हुआ । इसलिए उन्होंने ग्रामीण जीवन की वास्तविकता का अनुभव किया और उसी का समावेश अपने साहित्य में किया।

प्रेमचंद का विशाल उपन्यास साहित्य दलितोद्धार संबंधी विचार से परिपूर्ण है– प्रेमचंद ने करीब एक दर्जन उपन्यास लिखे हैं, जिसमें से कर्मभूमि, वरदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा एवं गोदान उपन्यासों में दलितोद्धार के विचार प्रस्तुत हुए हैं। इन उपन्यासों के माध्यम से दलित विषयक विचार की जानकारी प्राप्त होती है। हिन्दी साहित्य जगत में प्रेमचंद ही एक ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों में निरीह, शोषित, पीड़ित, व्यथित, दलित जनता की व्यथा कथा को वाणी दी युगों से साहित्य में जिस समुदाय को दरकिनार और हाशिए पर रखा गया था। ऐसे लोगों को केन्द्र में लेकर आये। प्रेमचंद के उपन्यासों के माध्यम से सवर्ण लोगों के मन में दलित के प्रति सहानूभुति हुयी । साहित्य के क्षेत्र का यह वैचारिक श्रेय निःसन्देह प्रेमचंद को ही दिया जाता है।

प्रेमचंद की दलित जीवन से सम्बन्धित कहानियां मंत्र, मन्दिर, गुल्ली डंडा, घासवाली, सद्गति, ठाकुर का कुआँ, दूध का दाम, कफन, मुक्ति मार्ग, सवा सेर गेहूँ , प्रेम का उदय, सभ्यता का रहस्य आदि कहानियों में प्रमुख और गौण पात्रों के माध्यम से दलित जीवन से संबंधी दलित, वंचित वर्ग के चमार, मेहतर, भंगी, गौड, भीर आदि दलित जातियों के प्रतिनिधित्व करने वाले सभी पात्रों का सफल अंकन किया है। जिसके द्वारा चित्रित दलित स्त्री पुरूष के माध्यम से दलित समाज की अज्ञानता, अंधविश्वास एवं परम्परागत विचारों के प्रति मोह को प्रदत्त किया है।

प्रेमचंद यह जानते थे कि अपने समय में दलित समाज दरिद्र, पीड़ित, दमित एवं शोषित थे। अतः मानसिक रूप से इस वर्ग के पात्र विद्रोही भावना पैदा नहीं कर पाये। दलित समाज पर सवर्ण समाज द्वारा अनेक मानसिक यंत्रणाएँ थोपी जाने के कारण दलित पात्र अलग रूप में चित्रित हुए हैं। दलित शब्द के अर्थ–संकोच और अर्थ–व्याप्ति में हिदू समाज में व्याप्त

जाति–प्रथा का पूरा चेहरा तमाम संदर्भों के साथ उभकर सामने आ जाता है। आज दलित शब्द का अर्थ विस्तार हुआ है, उसे सीमित क्षेत्र में ग्रहण नहीं करना चाहिए। वे सभी लोग जो अन्याय, यातना, शोषण का शिकार होते रहे हैं, वे सभी दलित हैं।

आज दलित केवल अछूत, अस्पृश्यता का दर्द झेलने वाले लोग ही नहीं हैं, वे लोग भी हैं जिनका शोषण–दोहन करके पराधीन बनाया गया है। दास बनाकर बाजारों में बेचा गया है।

डॉ0 अंबेडकर को सवर्णवादी वर्चस्व के अनगिनत कडुवे अनुभव थे। पंजाब में जाति–पाँति तोड़ो आंदोलन के नेता संतराम बी.ए. ने पहले तो बाबा साहेब को भाषण देने के लिए आमंत्रित किया। भाषण तैयार करके छप गया, तब उनमें भय व्याप गया कि अंबेडकर को बुलाना ठीक नहीं है। उस समय के अनेक सवर्ण नेता बाबा साहेब को अपने बाग का साँप समझते थे। स्वयं बाबा साहेब ने अपने अनुभव के आधार पर ही गांधी और जिन्ना दोनों को खलनायक कहा है। एक हिंदू खलनायक और दूसरा मुसलमान खलनायक।

दलित जीवन एवं संस्कृति वास्तव में अपने आप में एक आत्म मंथन का विचार हैं जिसके लिए प्रेमचंद, गांधी, अम्बेडकर एवं डॉ0 राममनोहर लोहिया ने दलितों के उत्थान के लिये काफी प्रयास किये। परन्तु प्रेमचंद के दलित साहित्य के सम्बंध में विभिन्न प्रकार के मत हैं जो दलितों की संस्कृति एवं चेतना के लिये प्रेरणा स्रोत हैं।

प्रेमचन्द की रचनाएँ आधुनिक भारत को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं, क्योंकि उन्हीं के समय से साहित्य में भारतीय पुनर्जागरण का प्रारम्भ होता है, जिसके पैरों की आहट उनकी रचनाओं में महसूस होती है। राष्ट्रीय जीवन की परिवर्तनशीलता, क्रिया–प्रतिक्रिया, प्रगति एवं प्रतिक्रियावादिता, धर्म तथा मानवता की परछाइयाँ प्रेमचंद की रचनाओं में झलकती हैं। प्रेमचंद की अनुभूति नदी के किनारे खड़े किसी दर्शक के समान नहीं है वरन् उन्होंने राष्ट्रीय जीवन के गहरे पानी में उतरक समस्याओं से बोझिल नैया को किनारे जाने में अपने सहयोगियों का हाथ बटाया था।

सितम्बर 1914 को सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हीराडोम की 'अछूत की शिकायत' कविता में दलितों की पीड़ा का वर्णन बड़ी उत्कृष्टता से किया गया है। वर्ण व्यवस्था से उपजी

स्वतंत्रता, समता, विरोधी अमानवीयता तथा सामाजिक भेदभाव की सोच को बदलकर आत्मसम्मान पैदा करना दलित साहित्य की मूलभूत चेतना है।

प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित शोध कार्य–

(1) प्रेमचंद के कथा साहित्य में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना, नारायन जगत, वी.बी.एस पूर्वांचल यूनीवर्सिटी।

(2) प्रेमचंद के कथा साहित्य में सामजिक संस्कृतिक अध्ययन मुश्ताक हुमान, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी।

(3) प्रेमचंद और भारतीय विज्ञान जगत, रामबक्ष, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी।

प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य–

प्रस्तावित शोध विषय का मुख्य उद्देश्य प्रेमचन्द के कथा साहित्य में विद्यमान दलित जीवन का विस्तृत अध्ययन करना होगा साथ ही दलित वैचारिकी के स्वरूप को स्पष्ट करना भी प्रमुख उद्देश्य रहेगा।

प्रस्तावित शोध कार्य की आवश्यकता–

शोधार्थी द्वारा दलित जीवन पर शोधकार्य करने के तीन मुख्य कारण हैं–

(अ) दलितों को जागरूक करना

(ब) समाज की रूढ़िवादी परिस्थितियों से परिचित कराना।

(स) दलित जीवन को उत्कृष्ट एवं अनुपम बनाने का प्रयास करना।

प्रस्तावित शोध कार्य में प्रयुक्त प्रविधि–

शोध प्रबन्ध लेखन व्यवस्थित शोध प्रविधि पर आधारित रहता है। अतः प्रस्तावित शोध के निर्माण के लिए भी निर्माण की विधि का अनुसरण किया जायेगा।

सर्वप्रथम विषय का शीर्षक और बिन्दुओं के आधार पर विभाजन किया जायेगा फिर उनके अनुसार अध्ययन सामग्री संकलन की जायेगी। विद्वानों के कथन और शीर्षकों तथा उपशीर्षकों के अनुसार विषय वस्तु का विश्लेषण एवं समीक्षा की जायेगी। विद्वानों के कथन और संदर्भ ग्रन्थों से

संदर्भ देकर अपने मत की पुष्टि की जायेगी। इसके साथ–साथ प्रेमचंद जी से जुड़ी विभिन्न अध्ययन सामग्री का अवलोकन। हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद जी के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के मतों समीक्षाओं की जानकारी एवं रिपोर्ट का संकलन। प्रेमचंद से संबंधित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, आलेख, समीक्षा तथा आलोचनाओं का अध्ययन। विभिन्न दृश्य, श्रव्य माध्यमों द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम की भाषा शैली का अध्ययन। कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट के माध्यम से हिन्दी में प्रेमचंद के सम्बन्ध में मान्यताओं का अध्ययन। नवीनतम विश्वस्तरीय जानकारियों का संकलन एवं अध्ययन।

'प्रेमचंद के कथा सहित्य में दलित जीवन का अध्ययन'

प्रथम अध्याय – प्रेमचंद : जीवन और समय

(1) प्रेमचंद : व्यक्तित्व और कृतित्व

(2) प्रेमचंद : और उनका समय (विभिन्न आन्दोलन– राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक साहित्यिक)

द्वितीय अध्याय – दलित विमर्श और प्रेमचंद

(1) दलित शब्द की व्यत्पुत्ति

(2) दलित साहित्य अवधारणा और स्वरूप

(3) दलित वैचारिकी का स्वरूप (महात्मा बुद्ध, ज्योतिबा फुले, अंबेडकर)

तृतीय अध्याय – दलित जीवन का यथार्थ

(1) प्रेमचंद के कथा साहित्य में दलित जीवन

(2) उपन्यास में यथार्थ बोध

(3) कहानी में यथार्थ बोध

(4) वैचारिक लेखन, निबंध और पत्र साहित्य

चतुर्थ अध्याय– दलित विमर्श और प्रेमचंद के अन्तर्विरोध

(1) स्वानुभूति बनाम सहानुभूति

(2) क्या प्रेमचंद दलित रचनाकार हैं ?

(3) प्रेमचंद कलम का सिपाही या सामंत का मुंशी।

पंचम अध्याय– दलित जीवन में अभिव्यक्ति और प्रेमचंद के कथा सहित्य का सौन्दर्य

(1) भाषा शैली

(2) प्रतीक

(3) लोकभाषा / कहावतों / मुहावरों

(4) भाषा का सौन्दर्यशास्त्र

उपसंहार–

परिशिष्ट :–

(1) साक्षात्कार

(2) आधार ग्रंथ

(3) संदर्भ ग्रंथ

(4) शब्दकोश

(5) विश्व कोश

(6) पत्र–पत्रिकाएँ

(7) प्रश्नावली

नोट– शोध निर्देशक के सुझाव से अध्याय एवं शोध कार्य में 20 प्रतिशत परिवर्तन सम्भव है।

आधार ग्रंथ

क्र0सं0	उपन्यास	उपन्यासकार	प्रकाशन	संस्करण
1	वरदान 1902	प्रेमचंद	हिन्दी पॉकेट बुक्स (प्रा0) लिमिटेड दिल्ली	नवीन संस्करण 1997
2	प्रतिज्ञा 1906	प्रेमचंद	अंकुर पब्लिकेशन दिल्ली	संस्करण, नवम्बर 1994
3	सेवासदन 1916	प्रेमचंद	लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद	1996
4	प्रेमाश्रम 1922	प्रेमचंद	साधना पॉकेट बुक्स दिल्ली	1993
5	रंगभूमि भाग–1 व 2 1924–25	प्रेमचंद	साधना पॉकेट बुक्स दिल्ली	1998
6	कर्मभूमि 1932	प्रेमचंद	मयूर पेपर बैक्स नोएडा	1995
7	गोदान 1936	प्रेमचंद	राजा पॉकेट बुक्स दिल्ली	प्रथम मुद्रण 2000

क्र0सं0	कहानी संग्रह	कहानीकार	प्रकाशन	संस्करण
1	मानसरोवर भाग–1 मानसरोवर भाग–1	प्रेमचंद	राजा पॉकेट बुक्स दिल्ली मचूर पेपर बुक्स नोएडा	प्रथम मुद्रण 2002 1999
2	मानसरोवर भाग–2	प्रेमचंद	राजा पॉकेट बुक्स दिल्ली	2000
3	मानसरोवर भाग–3	प्रेमचंद	सुमित्रा प्रकाशन इलाहाबाद	1999
4	मानसरोवर भाग–4	प्रेमचंद	सुमित्रा प्रकाशन इलाहाबाद	1999
5	मानसरोवर भाग–5	प्रेमचंद	सुमित्रा प्रकाशन इलाहाबाद	1999
6	मानसरोवर भाग–6	प्रेमचंद	सुमित्रा प्रकाशन इलाहाबाद	1999
7	मानसरोवर भाग–7	प्रेमचंद	राजा पॉकेट बुक्स दिल्ली	2000
8	मानसरोवर भाग–8	प्रेमचंद	राजा पॉकेट बुक्स दिल्ली	2000

संदर्भ ग्रंथ

(1) प्रेमचंद और उनका युग– रामविलास शर्मा– पहला छात्र संस्करण, 1993

(2) प्रेमचंद के अनछुए प्रसंग– कमल किशोर गोयनका– मानसी पब्लिकेशन्स 2012 राजकमल प्रकाशन।

(3) अंबेडकर सम्पूर्ण वाड्.मय– 22 खण्ड – प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली

(4) महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली– खण्ड–1,2– राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

(5) प्रेमचंद : सामंत का मुंशी– डॉ0 धर्मवीर– वेद प्रकाश, 2010

(6) प्रेमचंद की नीले आँखें– डॉ0 धर्मवीर– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

(7) शूद्रों का प्राचीन इतिहास– रामशरण शर्मा– राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

(8) धर्म ग्रन्थों का पुनर्पाठ– मुद्रा राक्षस– इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद 2005

(9) सत्ता संस्कृति और दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र– सूरज बड़त्या, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2012

(10) प्रेमचंद और दलित साहित्य की अवधारणा– सदानन्द शाही

(11) वाद विवाद संवाद – नामवर सिंह– राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1989

(12) इतिहास और आलोचना– नामवर सिंह– राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978

(13) आलोचना के मनुवादी सरोकार– नित्यानन्द तिवारी

पत्र–पत्रिकाएँ–

(1) हंस पत्रिका– राजेन्द्र यादव, संजय सहाय, नई दिल्ली

(2) दलित अस्मिता (त्रैमासिक) सम्पादक विमल थोरात, नई दिल्ली

(3) मंतव्य– (दलित विशेषांक) अतिथि सम्पादक, सूरज बड़त्या, संपादक , हरे प्रकाश उपाध्याय, लखनऊ

(4) युद्धरत आम आदमी– दलित विशेषांक, सम्पादक, रमणिका गुप्ता,

(5) तद्भव– दलित विशेषांक, बद्रीनारायण तिवारी, लखनऊ

(6) आजकल पत्रिका– नई दिल्ली

(7) रिदम पत्रिका– सम्पादक नामदेव, नई दिल्ली